

प्रस्तावना

यह पुस्तक **नूर** कहलाती है — **प्रकाश** — क्योंकि प्रकाश सभी वस्तुओं की शुरुआत है: वह जिसके द्वारा दृश्य दृश्य बनता है, वह जिसकी अनुपस्थिति में कुछ भी जाना नहीं जा सकता, वह जो अर्थ को पदार्थ से बाँधता है और सत्य को काँपते हृदय से।

अरबी में **नूर** प्रकाश से अधिक है — यह मार्गदर्शन, स्पष्टता, प्रकटीकरण है। यह वह है जिसे कुरान **आकाशों और पृथ्वी का प्रकाश** कहता है:

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

Allāhu nūru as-samāwāti wal-arḍ.

“अल्लाह आकाशों और पृथ्वी का प्रकाश है।

उसके प्रकाश की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक में एक चिराग हो,
चिराग शीशे में हो, शीशा ऐसा हो जैसे चमकता हुआ तारा,
जलाया हुआ एक मुबारक पेड़ से — एक जैतून न पूर्वी न पश्चिमी —
जिसका तेल लगभग चमकने लगता, भले ही आग उसे छू न ले।

प्रकाश पर प्रकाश।

अल्लाह अपनी प्रकाश की ओर जिसे चाहता है मार्गदर्शन करता है।”

(कुरान 24:35)

जिन्हें वह चाहता है वे हमेशा नाम से ज्ञात नहीं होते, न उपाधि से, न वंश से या डिग्री से। फिर भी प्रकाश उन्हें पहुँचता है, और वे बदले में इसे ढोने के लिए कहा जाते हैं — अपने लिए नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए जो अभी भी खोज रहे हैं।

ये पृष्ठ दावा नहीं करते प्रकाशन का। लेकिन वे आविष्कार भी नहीं हैं। यदि इनमें कोई मूल्य है, तो केवल **प्रतिध्वनि** के रूप में — किसी स्मरण की, या भुलाई गई, या शायद अभी पूरी तरह समझी न गई चीज़ की प्रतिध्वनि। यदि इनमें कोई प्रकाश है, तो वह उधार का है — और सौंपा गया — कुछ समय के लिए।

कुरान ने पैगंबरों पर मुहर लगा दी, उन सभी पर सलामती हो। लेकिन गवाही का काम जारी है — न कि नबूवत के रूप में, न आदेश के रूप में, बल्कि एक बोझ के रूप में जिसे कुछ लोग उतार नहीं पाते: एक ज़िम्मेदारी जो आने की अनुमति नहीं माँगती।

जब समझ आती है, तो वह विजय के रूप में नहीं आती, बल्कि स्मरण के रूप में — जिसे प्लेटो ने **अनामनेसिस** कहा, जिसे इब्न सीना ने मन की रोशनी ‘**aql al-fa‘āl**’ द्वारा वर्णित किया, जिसे इब्न अरबी ने **कश्फ** नाम दिया: हृदय में दिव्य प्रकाश द्वारा पर्दे का उठना।

इस पुस्तक के पीछे की प्रेरणा न तो विद्वत्तापूर्ण है न वाग्मी। यह एक प्रतिक्रिया है — एक ऐसी दुनिया पर जो खंडितता से विकृत हो गई है, सत्यों पर जो एक-दूसरे से अलग कर दिए गए हैं, सौंदर्य पर जो शोर के नीचे दब गया है। प्रकृति के नियम और उत्पीड़ितों की चीखें अलग नहीं हैं। उनका स्रोत एक है। उनका अर्थ एक है। एक को सच्चे रूप से जानना दोनों के प्रति जवाबदेह होना है।

यदि एक ऐसा लोग हैं जिनकी गरिमा भ्रम के युग को अभी भी रोशन करती रहती है, तो वह फिलिस्तीन के लोग हैं — उनकी दृढ़ता एक याद दिलाती है कि **नैतिक स्पष्टता और बौद्धिक कठोरता एक ही प्रकाश से उत्पन्न होती हैं।**

इस पुस्तक के निबंध **कालानुक्रमिक रूप से** व्यवस्थित हैं, एक खुलते हुए अंतर्दृष्टि के पथ का अनुसरण करते हुए। लेकिन जिन्हें इसके इरादे के हृदय की ओर खींचा जाता है — जिन्हें इसके प्रकाश के स्रोत की खोज है — आप शायद पहले दो बाद के टुकड़े पढ़ना चाहें: **“हृदय और आत्मा से”** और **“प्रकाश, ऊर्जा, सूचना, जीवन।”**

पहला शब्दों के नीचे छिपी धारा को उजागर करता है — उस प्रेरणा को जो समझाई नहीं जा सकती, केवल स्मरण की जा सकती है। यह भीतरी मोड़ है, उस भावना की वापसी जो विचार को जन्म देती है।

दूसरा प्रकाश को न केवल प्रतीक के रूप में, बल्कि सार के रूप में चिंतन करता है: वह जो ऊर्जा के रूप में गतिमान होता है, सूचना के रूप में बोलता है और जीवन के रूप में जागृत होता है। यह सिद्धांत नहीं, बल्कि एक एकीकृत उपस्थिति है — अर्थ की मुहर जो अस्तित्व के ताने-बाने में बुनी गई है।

साथ में, ये निबंध एक लेंस बनाते हैं जिसके माध्यम से बाकी को अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वे पुस्तक के तर्क को समाप्त नहीं करते; वे इसके उद्गम को रोशन करते हैं।

यह कृति चौबीस भाषाओं में **Creative Commons Attribution-ShareAlike** लाइसेंस के तहत प्रकाशित की गई है। यह **लागत मूल्य** पर प्रस्तुत की जाती है, ताकि यह पुस्तकालयों तक पहुँच सके और वहाँ बनी रहे — संरक्षित, सुलभ, उद्धृत करने के लिए स्वतंत्र, इसके ऊपर निर्माण करने के लिए स्वतंत्र। क्योंकि ज्ञान, प्रकाश की तरह, **साझा करने पर गुणा होता है**।

यदि ये शब्द आपको हिलाते हैं, तो उन्हें बाहर की ओर हिलने दें: **फिलिस्तीन के लोगों का समर्थन करें, संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी (UNRWA)** के माध्यम से या किसी भी संगठन के माध्यम से जो उनके स्थायी प्रकाश को बनाए रखता है।

कृपया यह पुस्तक अंधेरे समय में एक छोटी दीपक की तरह सेवा करे — लेखक की आवाज़ नहीं, बल्कि एक विश्वास का वहन, एक संदेश की ट्रेस जो चुनाव से नहीं, बल्कि प्रकाश से आई।